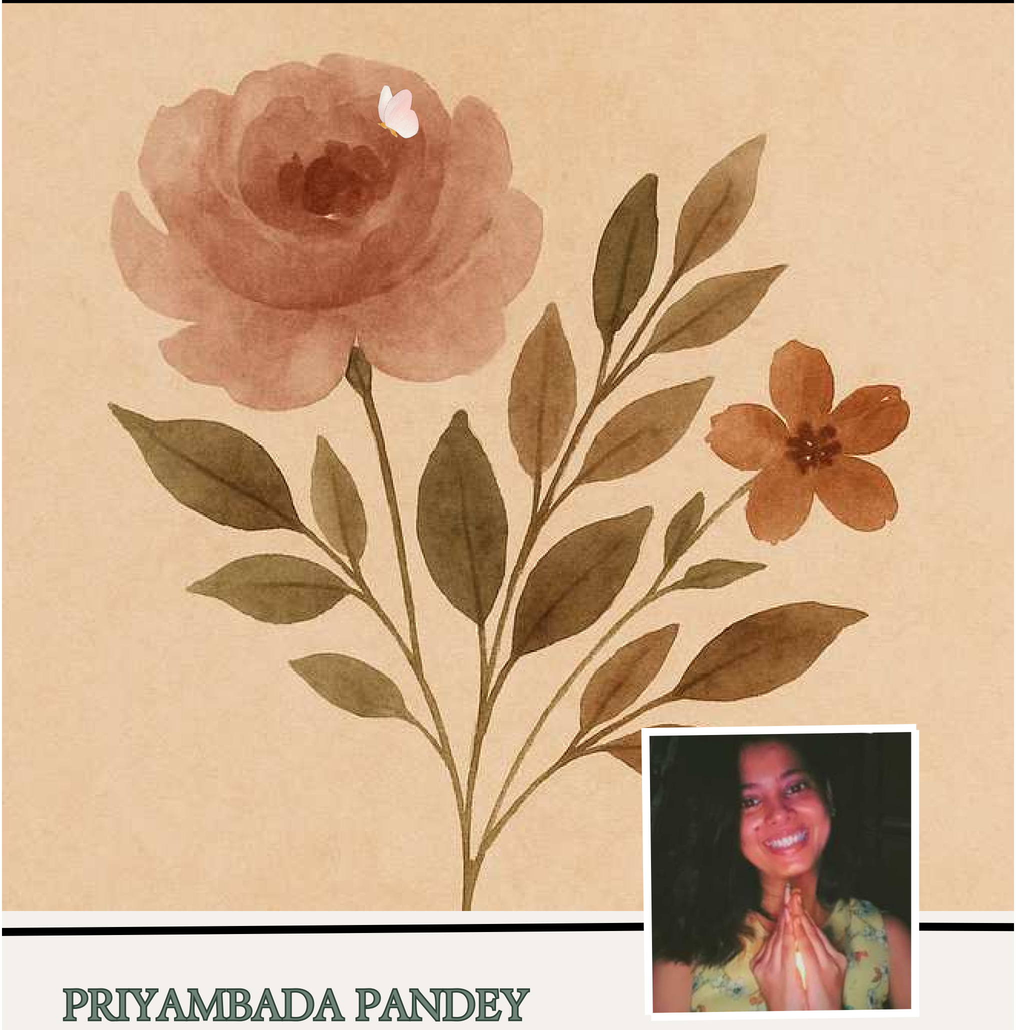
मेरे जीवन की कविता

कुछ मीठे पल कुछ खट्टी यादें और कुछ कड़वे सच



PRIYAMBADA PANDEY

मेरे जीवन की कविता

कुछ मीठे पल कुछ खट्टी यादें

और कुछ कड़वे सच

PRIYAMBADA PANDEY

अनुक्रमणिका

अनुभाग 1 --- मीठे पल

अनुक्रमणिका

अनुभाग 2 --- खट्टी यादें

अनुक्रमणिका

अनुभाग 3--- कड़वे सच

अनुभाग -1



मीठे पल

कविता 1



मां के आंचल की छांव

माँ के आँचल की छाँव में
जहाँ ज़िंदगी मुस्कुराती है बेहिसाब,
वहीं हर आँसू भी बन जाता है इक हिजाब।
लबों पे दुआओं की रवानी होती है,
हर साँस में बस उसकी निगरानी होती है।



माँ की लोरी जैसे कोई नग़मा-ए-सुकूँ,
जिसे सुनकर थम जाए हर तूफ़ान की
धड़कन।
उसकी पलकों के साये में मिलती है राहत,
जैसे वीराने में बरसती हो रहमत।



वो छू दे तो जख़्म भी गुलाब हो जाएँ,
उसके अल्फ़ाज़ दिल की किताब हो जाएँ।
हर शिकवा, हर ग़म, हर अंधेरी रात,
माँ के लहजे में पिघल जाएँ हर बात।

जब भी तन्हाई ने दिल को डराया है,
माँ का नाम लबों पे खुदा बन के आया है।
उसकी दुआओं का असर अब भी साथ है,
वरना इस जहाँ में कौन हमारे साथ है?

कविता - 2

पहली बारिश

याद है मुझको, वो बचपन की शाम,
जब बदली छाई थी, लेकर पैगाम।
गर्म हवाएँ, चुप हो गईं थीं, थमकर,
मिट्टी की खुशबू, उठी थी सिहरकर।

बिजली चमकी, और गरजा बादल,
माँ की उंगली थामे, मैं बेखबर।
एक बूँद गिरी, गाल पर ठंडी,
आँखों में आई, इक नई रोशनी।



कूद पड़ा मैं, पानी में छप–छप,
कागज़ की नाव, तैरे सरपट।
छतरी का कोई, मोल न था तब,
खुली बाहों से भीगा, मैं खूब।

मिट्टी के घरौंदे, बनाने का चाव,
बारिश में मस्ती, बिना किसी तनाव।
धो जाती थी बारिश, हर फिक्र पुरानी,
बचपन की वो पहली बारिश, याद है कहानी।





कविता 3

पहली मोहब्बत

वो स्कूल के दिन, वो कच्ची उम्र का प्यार,
एक चेहरा था जो दिल को भा गया था यार।
नज़रों–नज़रों में बातें होती थीं हज़ार,
कह न पाते थे, बस धड़कनें थीं बेक़रार।

वो हल्की सी शरारत, वो चोरी–चोरी देखना,
किताबों में छुपाकर खत तुम्हारा रखना।
पलकों पे इंतज़ार, होंठों पे मुस्कान,
जैसे कोई अनकही कहानी, कोई प्यारा सा गान।

बारिश की बूँदों में, वो कागज़ की कश्ती,
संग संग चलना, वो मीठी सी मस्ती।
डर था ज़माने का, डर था बिछड़ने का,
पर दिल में था बस इक अरमान, संग रहने का।



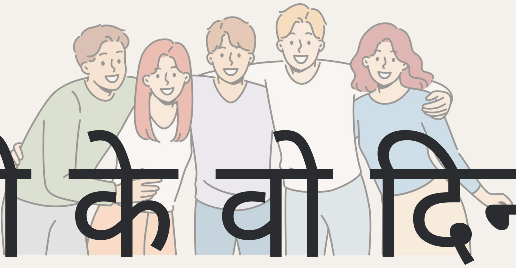
कविता 3 पहली मोहब्बत



वो पहला एहसास, वो मासूमियत भरी चाहत,
आज भी याद आती है वो बचपन की मोहब्बत।
वक़्त बदला, दुनिया बदली, हम भी बदल गए,
पर वो पहली छुअन, वो यादें आज भी ताज़ा हैं।

न कोई शिकायत, न कोई अब गिला है,
बस वो प्यारा सा एहसास, जो कभी मिला था।
बचपन की वो पहली मोहब्बत, एक अनमोल ख़ज़ाना,
जो आज भी दिल के किसी कोने में मुस्कुराता है।

कविता 4



दोस्ती के वो दिन

साइकल की सवारी, और नुक्कड़ की बातें,
टॉफी के लिए लड़ना, फिर बाँटना भी रातें।
क्लास में चुपके से हँसी का फूटना,
और नोटबुक में नामों का गुलशन सा खिल उठना।



टिफ़िन में उसका परांठा, मेरा अचार,
और मास्टर जी से डाँट खाना — साथ-साथ हर बार।
फिर यूँ ही बिना कहे रूठना, फिर मान जाना,
ऐसी दोस्ती अब कहाँ रोज़मर्रा में आना?



वो स्कूल की घंटी, और छुट्टी की दौड़,
अब भी दिल में वही यारी की धड़कन छोड़।
उन दिनों की मासूम हँसी,
आज की ज़िम्मेदारियों में कहीं खो गई सी।

कविता 4 दोस्ती के वो दिन



कभी साथ में मिलकर पतंगें उड़ाना,
कभी बारिश में भीगी सड़कों पर दौड़ा जाना।
किसी के घर पे चढ़कर आम चुराना,
और पकड़े जाने पर मिलके बहाना बनाना।

वो मेले के झूले, वो चाट की ठेलियाँ,
हर खुशी में शामिल थीं अपनी टोलियाँ।
बिन मतलब हँसना, बिन बात के रूठना,
वो बचपन का हर लम्हा था कितना सुहाना।

वो छोटे-छोटे राज़, वो वादे अधूरे से,
जो सिर्फ़ हमीं तक थे, दुनिया से परे से।
किसी के दिल की धड़कन पहचान लेना,
और बिन बोले ही हर बात समझ लेना।



न कोई दिखावा था, न कोई बनावट,
बस दिल की साफ़ थी हर एक आदत।
वो याराना ऐसा, कि कभी न भूलेगा,
उम्र भर जो साथ दे, वो रिश्ता अनमोल है।

अब वक़्त बदला, रास्ते हुए हैं जुदा,
मगर दिल से जुड़ी है वो यारों की सदा।
कभी चाय की प्याली पे मिलती हैं निगाहें,
तो लौट आती हैं फिर वो गुज़री हुई राहें।

कविता 4 दोस्ती के वो दिन





वो बेफिक्री का आलम, वो सपनों की उड़ान,
कहाँ मिलती है अब वैसी सच्ची पहचान?
ये दौलत, ये शोहरत है दुनिया की माया,
वो दोस्ती का बंधन ही सच्चा है, भाया।

कहीं दूर बसे हों पर यादें तो आती हैं,
वो हँसी, वो मस्ती, वो बातें सुहानी।
ज़िन्दगी की भागमभाग में थक जाते हैं जब,
तो याद आता है यारों का वो प्यारा सा मंज़र।



कविता 5



पापा की ऊँगली





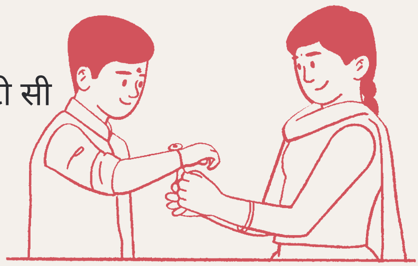
पिता की उँगली थामे चली थी,
नन्ही सी मैं, दुनिया देखने निकली थी।
कदम छोटे थे, राहें थीं अनजानी,
हर मोड़ पर मिलती थी नई कहानी।
उनकी हथेली में थी वो गरमाहट,
जो देती थी हर डर को राहत।
गिरते-गिरते जब भी लड़खड़ाई,
उनकी मुस्कान ने फिर हिम्मत बंधाई।
कभी तितली पीछे, कभी कंकड़ उठाती,
हर शैतानी पर वो बस मुस्कुराते।



उनके कंधे पर था सुरक्षित संसार,
जैसे फूलों पर ओस की फुहार।
वो कहानियाँ, वो लोरी की बातें,
सिखाती थीं जीवन की हर घातें।
आज भी याद है वो पकड़, वो विश्वास,
हर मुश्किल में लगता है वो आस-पास।
पिता की उँगली थामे जो चली थी,
वो यादें आज भी दिल में पली थी।
हर रास्ते पर, हर चुनौती के पार,
उनका साथ है, मेरा सच्चा आधार।

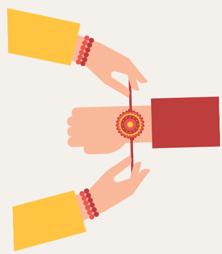
कविता 6

राखी का बंधन



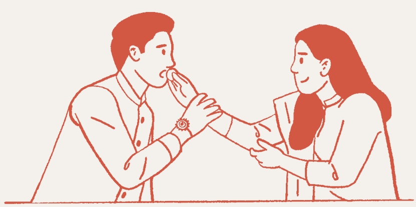
बचपन की गलियाँ, वो सावन का महीना,
जब राखी का बंधन होता था सबसे हसीन। छोटी सी
कलाई पर, रेशम का धागा,
बहन के प्यार का, अनमोल था वो फागा।

वो रूठना–मनाना, वो खट्टी–मीठी तकरार,
फिर एक–दूजे पर लुटाना बेशुमार प्यार।
भाई की आँखों में, बहन की खुशी का नूर,
राखी के धागे में बंधा, हर गम था दूर।



नए कपड़ों की महक, मिठाई का स्वाद,
बचपन की राखी की, हर बात थी याद।
बड़ों का आशीर्वाद, छोटे भाई का उछलना,
पूरे घर में थी रौनक, सबका यूँ मचलना।

वो खिलखिलाहटें, वो मीठी सी शरारत,
राखी के दिन होती थी हर बात खास।
आज भी जब सजती है, वो थाली रंगों भरी,
बचपन की यादें आती हैं, आँखें हो जाती हैं नम
खड़ी।



कविता 6

राखी का बंधन

समय के साथ बदल गए हैं चेहरे,
पर वो रिश्ता आज भी है सबसे गहरा।
राखी का बंधन, ये सिर्फ धागा नहीं,
ये बचपन का प्यार है, जो कभी टूटता नहीं।



कविता 7

चाय वाली शामें

दादी के संग बैठकर चाय की चुस्कियाँ,
और वो कहानियाँ जो अब सिर्फ़ यादें बन गईं।
छोटा-सा कप, और उसमें भरी दुनिया,
हर चुस्की में ज़िंदगी की गहराई पिघल गईं।



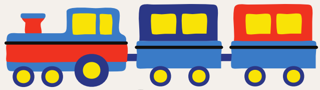
बिस्कुट को धीरे से चाय में डुबोना, और फिर वो
आँखों से इशारा — सब समझ जाना।
टीवी कम, बातें ज़्यादा होती थीं, छोटी-छोटी बातों
में बड़ी-बड़ी सीख होती थीं।
वो तुलसी-अदरक की महक निराली, हर शाम
बन जाती थी, इक उत्सव वाली।
धुँधली यादों में आज भी वो प्याली, सूकून की
साँसें देती, हर शाम है मतवाली।



चौखट पर बैठी, गली की आहटें सुनना, ख़ामोशी
में भी कितना कुछ बुनना। हँसी-ठिठोली मे
गुज़रती थी हर घड़ी, दादी की आँचल में सिमटी
थी वो दुनिया बड़ी।
अब भागदौड़ है, मशीनों की दुनिया है, पर उस
एक कप की गर्मी आज भी सुकून बनके चुपचाप
जिया है। चाय वाली वो शामें, अब ख़्वाब बनकर
आती हैं, जब मन थक जाए — तो बस वहीं बैठ
जाती हैं।

कविता 8





खिलौनों की दुनिया



मिट्टी के खिलौने, लकड़ी की गाड़ी,
और आँखों में चमक थी जैसे कोई
रजाई सी प्यारी।
गुड़िया की शादी में मोहल्ला जुटता था,
और टूटा खिलौना भी ख़ज़ाना लगता
था।

घरौंदा बना कर उसमें जीते थे सपने,
न कोई चिंता, न कोई कल के अपने।
वो लट्टू की धूम, वो गिली–डंडे की चाल,
हर खेल में थी एक अनोखी सी ढाल।
कागज़ की नाव तैरती थी पानी में,
लगता था जैसे सफ़र कर रहे हों कहानी
में।
हर गुड्डा, हर गुड़िया में जान भरते थे,
अपने ही हाथों से रिश्ते गढ़ते थे।

खिलौनों की वो दुनिया अब अलमारी में
नहीं,
बल्कि दिल के किसी कोने में सहेजी हुई
सी रही।

अब सब कुछ स्क्रीन पर चलता है,
पर वो स्पर्श — जो मिट्टी के
खिलौने देते थे,
वो आत्मीयता आज के प्लास्टिक
में कहाँ मिलता है?

वो बचपन की महक, वो माटी की
सोंधी खुशबू, इन डिजिटल खेलों
में कहाँ मिलती है वो जुस्तजू?
आज भी दिल तरसता है उस
सादगी के लिए, उस खिलौनों की
दुनिया के जादू के लिए।

कविता 9

त्योहारों की रौनक

बचपन के आँगन में, जब त्योहार आते थे,
एक अलग ही जादू, हर तरफ़ बिखेर जाते थे।
नए कपड़े की ख़ुशबू, मिठाइयों का स्वाद,
दादी की गोदी में सिमटी, हर मीठी याद।



मिट्टी के दीये, रंगोली के प्यारे रंग, छोटी सी
कलाई पर, राखी का अटूट संग।
ईद की सेवइयाँ, होली के वो गुलाल,
हर चेहरा चमकता था, न कोई था मलाल।



पटाखों का शोर, मेलों की वो भीड़,
दिल में भर जाती थी, एक अनोखी सी पीड़।
कहाँ गए वो दिन, वो भोली सी मुस्कान,
त्योहारों में बसता था, हमारा सारा जहान।



अब भी जब आते हैं, वही पुराने त्योहार,
आँखों में तैर जाता है, बचपन का वो प्यार।
वो रौनक, वो ख़ुशियाँ, वो मासूमियत भरी,
बड़ी होकर भी दिल में, आज भी वो बसी।

कविता 10



स्कूल की पहली घंटी



कंधों पर नया सा बस्ता, किताबों की भीनी
खुशबू,
आँखों में डर, और माँ की ऊँगली को पकड़ने
की ज़िद थी कुछ रू-ब-रू।
स्कूल का वो दरवाज़ा किसी पहाड़ जैसा लगा,
और पहली घंटी की आवाज़ — जैसे नई
दुनिया का धक्का।



"माँ भी आएगी साथ?" — उस मासूम सवाल
में डर छुपा था,
पर जब उसने मुस्कुरा कर कहा "जा बेटा", तो
लगता था जैसे पूरी दुनिया से भिड़ना सिखा
दिया।

क्लासरूम की वो पहली पंक्ति, जहाँ नाम पूछने
पर गला सूख गया था।
पर धीरे-धीरे वही क्लास — खेल, दोस्ती और
सपनों की जगह बन गया था।
स्कूल की वो पहली घंटी, कानों में जब बजती
थी, नींद अधूरी, ख्वाब अधूरे, फिर भी मन में
सजती थी।





कविता 10

स्कूल की पहली घंटी



बस्ता कंधों पर झुलाए, दौड़ लगाते थे हम
सब, याद आती है आज भी, वो बचपन की
धुन अब।
क्लासरूम की बेंचेस, अब भी याद आती हैं,
जहाँ हर दोस्त से पहली बार, नज़रें मिलती
थीं।

अध्यापक की वो आवाज़, जो अनुशासन
सिखाती थी, स्कूल की वो पहली घंटी, सब
कुछ ताज़ा कराती थी।
किताबों के पन्ने पलटते, नई बातें समझते थे,
गणित के सवाल, कभी-कभी उलझते थे।

टिफिन साझा करते थे, कहानियाँ बुनते थे,
स्कूल की वो पहली घंटी, जीवन के पाठ
पढ़ाती थी।
खेल के मैदान में, गिरते-उठते-हँसते थे, जीत
और हार के मायने, वहीं तो समझते थे।

हर सुबह का आगाज़, एक नई उम्मीद के
साथ, स्कूल की वो पहली घंटी, जुड़ी है
बचपन की हर बात।

कविता 10

स्कूल की पहली घंटी

अब जब ज़िंदगी की बड़ी क्लास में हूँ,
तो उस पहली घंटी की मासूमियत बहुत
याद आती है, क्योंकि उस दिन मैंने
जाना था — हर नया सफ़र डर के साथ
शुरू होता है, पर हौसले से दोस्त बनकर
चलता है।





अनुभाग -२

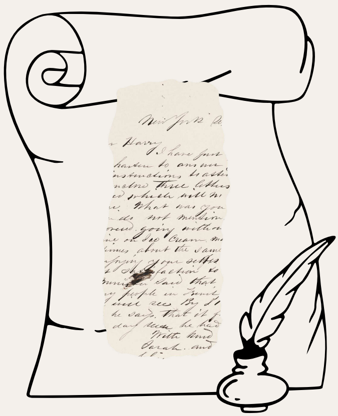


खट्टी यादें

कविता 11

अधूरी चिट्ठी

कागज पर बिखरे कुछ शब्द, कुछ
अनकही सी बात, अधूरी चिट्ठी ये मेरी,
लिए फिरती है हर रात।
कलम रुकी जाने क्यों, स्याही भी थम
सी गई, दिल की बात, अधूरी ही मेरे
होंठों पर जम सी गई।



लिखना था वो प्यार सारा, वो कसमें,
वो वादे, लिखना था वो इंतज़ार, वो
मिलने के आधे-आधे।
लिखना था वो हर पल, जो तेरे बिन
सूना था, पर जाने क्यों, बस कोरा ही
एक पन्ना चुना था।



शायद डर था मुझको, कि अल्फाज़
कम पड़ जाएँगे, या तेरी खामोशी के
आगे, ये सारे फीके पड़ जाएँगे। या
शायद ये भी था कि, तू समझेगा बिन
कहे, कुछ रिश्ते होते हैं ऐसे, जहाँ
लफ़्ज़ों की ज़रूरत न रहे।



कविता 11



अधूरी चिट्ठी

आज भी वो अधूरी चिट्ठी, दराज़ में पड़ी है,
हर बीती रात के साथ, यादें वो कड़ी हैं।
काश!
लिख पाता मैं वो सब, जो कहना था तुझसे,
पर अब क्या फायदा, जब तू दूर है मुझसे।

ये अधूरी चिट्ठी, एक कसक सी बन गई है,
अनकही बातों की, एक टीस सी मन में रह
गई है।
कभी वक्त मिले तो सोचना, क्या था उसमें
बाकी, जो पूरी होकर भी, न हो सकी तेरी
साथी।

कविता 12

टूटा झूला



पेड़ की शाख से, लटका है बेजान, टूटा झूला,
लिए पुरानी पहचान।
कभी था इस पर, बचपन का राज, अब
खामोश पड़ा है, ये टूटा हुआ साज।

हवा चलती है, तो धीरे से हिलता है, अपने बीते
दिनों को, शायद ये गिनता है।
बच्चों की हँसी, किलकारी और शोर, गूँजते थे
इस पर, सुबह से भोर।



रस्सियाँ कमजोर, तख्ता भी पुराना, कौन
आएगा अब, इसे झुलाने?
मौसम की मार, सहता रहा ये चुपचाप, टूटा है
पर, यादें हैं बेहिसाब।

सूनी है डाल, सूना है आँगन, अब नहीं आती,
वो खुशियों की सावन।
एक ज़माना था, जब हर कोई आता था, झूले
पर चढ़कर, सपने सजाता था।
पर अब बस, यादें ही बची हैं संग, टूटा झूला,
बेरंग।

कविता 13



वो आखिरी अलविदा

वो आख़िरी अलविदा, आज भी याद आती है, जब साँसें रुक सी गई थीं, और रूह थर्राती थी।
तुम्हारी निगाहों में जो नमी थी, वो अनकही सी बात, मेरे दिल के हर कोने में, कर गई थी वो घात।

वो पल था एक सदी का, जब तुम मुड़े नहीं, शायद तुम जानते थे, हम फिर कभी जुड़ेंगे नहीं।
मेरे होंठ हिले थे कुछ कहने को, पर आवाज़ न निकली, बस सूनी आँखों से, हर उम्मीद फिर फिसल निकली।

वो दूर जाते हुए कदम, वो धुंधली सी तस्वीर, लिख गई थी मेरे दिल पर, एक अधूरी तकदीर। कैसे कहूँ तुम्हें, क्या गुज़री उस घड़ी पर, जब सब कुछ छूट गया था, बस तुम्हारी ही याद खड़ी पर।



वो आख़िरी अलविदा, एक ज़ख्म बन गई है, जो हर रात, हर सुबह, फिर से हरी हो जाती है। अब ज़िन्दगी है बस एक सिलसिला, तुम्हारी यादों का, और दिल में बस एक ही आवाज़, तुम्हारे वादे और इरादों का।

कविता 14



पुरानी डायरी के पन्ने







पुरानी डायरी के पन्ने, आज फिर से पलटे हैं, धूल जमी यादों पर, कुछ लम्हे सिमटे हैं।
सूखी हुई गुलाब की पत्ती, एक तस्वीर पुरानी, हर पन्ना खोल रहा, एक भूली हुई कहानी।

लिखी थी कभी वो बातें, जो दिल में थी गहरी, बचपन की शरारतें, जवानी की वो शहरी।
कुछ अधूरे ख्वाब थे, कुछ पूरे हुए अरमान, हर लफ्ज़ में छुपा है, एक बीता हुआ इंसान।

पहली मोहब्बत का जिक्र, वो चुपके से मुस्कुराना, दोस्तों के साथ मस्ती, वो रुठना और मनाना।
परीक्षा की रातें, और वो नींद का उड़ जाना, छोटी-छोटी बातों पर, सबका रूठ जाना।

कविता 14

पुरानी डायरी के पन्ने

आज पढ़के सब ये, आँखों में नमी सी है, कहीं खो गया वो वक्त, बस उसकी कमी सी है। ये पन्ने नहीं बस, ये ज़िन्दगी का सार हैं, बीते हुए कल के, ये अनमोल उपहार हैं।



कविता 15

बिछड़ती शामें



सुनहरे रंग बिखेरती, सूरज ढलने की बेला।
नदिया किनारे, एक मैं, और यादों का
अकेला मेला।

धीरे-धीरे सिमटता उजाला, अंधेरों का
बढ़ता साया।
लगता है हर शाम बिछड़ रही है, छोड़कर
अपनी माया।

परिंदे लौट रहे हैं अपने घरों को, खत्म हो
गया उनका सफर।
पर ये दिल आज भी बैठा है, तेरे इंतज़ार में,
इस डगर।

ये बिछड़ती शामें गवाह हैं, मेरी हर सिसकी
की।
आसमान में दिखती है मुझे, तेरी तस्वीर,
हर रोशनी की।

एक दिन ये शाम भी ढल जाएगी, जैसे ढल
गए हैं हम।
पर तेरे बिन ये ज़िन्दगी, रहेगी हमेशा नम।



कविता 16



खोई हुई रूहें

शहर की भीड़ में, कुछ चेहरे गुमनाम।
रोशनी में भी जिनकी, अंधेरी है हर शाम।

चलती हैं साँसों से, पर ज़िंदा नहीं हैं।
जिस्म के पिंजरे में, जैसे कोई परिंदा नहीं है।

ढूंढती हैं हर गली, हर घर, हर चौराहों पर।
एक पहचान, एक नाम, एक मकसद की राहों पर।

इन आँखों में सवाल है, इन लबों पर खामोशी।
एक अधूरा सा गीत, एक अधूरी सी कोशिश।

खोई हुई रूहें ये, खुद से ही जुदा हैं।
जिस्म यहाँ है, पर दिल कहीं और फना हैं।

क्या इन्हें मिलेगा अपनापन? क्या इन्हें मिलेगी
वो मुस्कान? या यूँ ही भटकती रहेंगी ये,
अनजानी सी, बेजुबान?

कविता 17

सूनी राखी

रक्षाबंधन के दिन, हर घर में खुशी छाई है।
पर एक बहन की आँखों में, सिर्फ उदासी आई है।

राखी का धागा, आज भी इंतज़ार में है।
भाई की कलाई, आज भी खाली है।

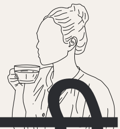


वो हँसी, वो लड़ाई,
वो प्यार की बातें,
बस यादों में हैं,
सूनी हैं आज वो रातें।

भेजी थी राखी मैंने, पर वो लौटकर आई है।
साथ में लाई है, कुछ पुरानी यादें और परछाई है।

किससे लड़ूँ, किससे रूठूँ, किसे सुनाऊँ अपना दर्द।
सूनी है राखी, सूनी है मेरी दुनिया, मेरे भाई!

कविता 18



दो चाय की प्याली



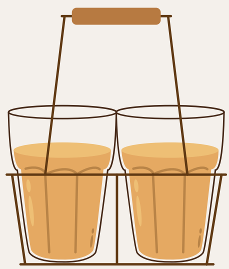
सुबह की पहली किरण, दो प्याली, दो बातें।
एक तेरे हाथों में, एक मेरे, याद आती हैं वो
मुलाकातें।



धुंआ उठता है प्याली से, जैसे उठती हैं तेरी
यादें। मीठा कम, कड़क ज़्यादा, जैसे ज़िंदगी की
सौगातें।

ठंडी हो गई है एक प्याली, सूनी पड़ गई है मेज।
पर दिल में आज भी है, उस चाय का गर्म
एहसास, उस प्यार की तेज।

कभी तू अपनी प्याली से, मेरे होंठ लगाता था।
कभी मैं अपनी प्याली में, तेरी हँसी मिलाती थी।



आज भी हर सुबह, दो प्याली बनती हैं। एक मैं
पीती हूँ, एक तुझसे, बस यादें ही करती हैं।

कविता 19

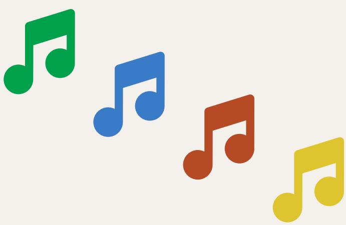
पुरानी कॉलर ट्यून

जब तेरा नंबर मिलाता था,
एक धुन बजती थी प्यारी सी।
वो धुन थी नहीं सिर्फ आवाज़,
वो थी धड़कन हमारी सी।



तूने बदल दी होगी शायद,
या भूल गया होगा आज।
पर मेरे कानों में आज भी,
बजता है वो पुराना साज़।

वो दो मिनट की धुन में,
पूरी कहानी सिमटी थी।
हर धुन के बाद दिल कहता था,
क्यों नहीं तू बोलती थी।





आजकल तो हर तरफ, शोर ही शोर है। पर वो पुरानी कॉलर ट्यून, आज भी मेरे मन का शोर है।

कविता 20



आख़िरी बार माँ को देखा

जब देखा था आख़िरी बार, माँ का चेहरा बहुत शांत था।
एक लंबी थकान के बाद, जैसे मिला हो उनको आराम
था।

हाथों की वो लकीरें, आज भी याद आती हैं।
हर खुशी और हर दर्द में, मेरी आँखों में छा जाती हैं।

माथे की वो सिलवटें, जैसे ज़िंदगी का हर पन्ना कहती
थीं।
मेरी हर गलती पर भी, वो बस मुस्कुरा देती थीं।

आज भी जब कोई मुश्किल आती है, आँखें बंद करता हूँ,
तो सामने वो ही चेहरा दिखता है। जैसे हर समस्या का
हल, वो मुझसे ही कहता है।

काश वो वक्त रुक गया होता, काश वो पल थम गया
होता।
तो आज भी मेरे पास होती माँ, और मेरा ये दिल कभी
ना रोया होता।

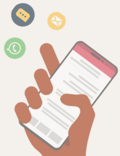


अनुभाग -3



कड़वे सच

मेरे जीवन की कविता – कुछ मीठे पल कुछ खट्टी यादें और कुछ कड़वे सच
PRIYAMBADA PANDEY



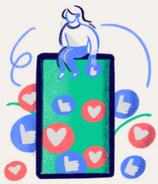
कविता 21

दिखावे का दौर



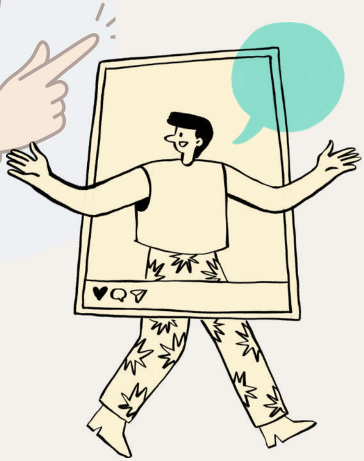
चेहरे पर मुस्कान झूठी, और आँखों में नमी है।
हर कोई दौड़ रहा है, पर ज़िंदगी में कमी है।

महंगी गाड़ियाँ, बड़े घर, खुशियाँ मगर उधार हैं।
सोने की थाली में खाना, पर रिश्तों में दरार हैं।

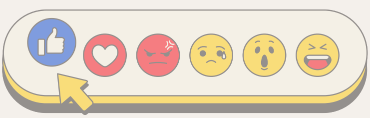


दिखावे की दुनिया में, हर कोई कलाकार है।
भीड़ में खोई हुई सच्चाई, झूठ का ही व्यापार
है।

सोशल मीडिया की दीवारों पर, सजी हैं हज़ारों
तस्वीरें। पर हर तस्वीर के पीछे, टूटी हुई
तकदीरें।



यह कैसा दौर है, जहाँ हर कोई व्यस्त है।
दिखावे में जीने को, हर कोई मजबूर है।



कविता 22



नकली रिश्ते

झूठे वादों की इमारत, दिखावे की दुनिया में। हँसी तो है
पर दिल खाली है, हर रिश्ते में।





मतलब की डोर से बंधे हैं सब, कोई साथ नहीं देता।
जब तक हो तेरा काम, तब तक ही साथ देता।



बातें तो हैं मीठी-मीठी, पर दिल में खंजर छुपा है।
मुस्कुराते चेहरों के पीछे, एक मुखौटा लगा है।
यह कैसा दौर है, जहाँ प्यार भी बिकता है।
सच्चाई और अपनापन, बस तस्वीरों में दिखता है।





जब तक है तेरे पास, तब तक ही तेरा साथ है।
टूट जाते हैं ये रिश्ते, जैसे काँच की वो प्यास है।

कविता 23



आदर्शों का मोल





भीड़ में खोया आदर्श, आज हर शख्स लाचार
है। दिखावे की दुनिया में, सच का दाम बेकार है।

सत्य की बातें सब करते हैं, पर खुद ही उससे दूर
हैं।
हर किसी की बोली में, सिर्फ झूठ और फरेब है।



बचपन में सीखी थी जो बातें, वो आज किताबों
में बंद हैं।
बड़े होकर बदल गए सब, जैसे कोई नया इंसान
है।

आज हर रिश्ता बेमोल है, प्यार भी पैसों का
गुलाम है।
आदर्शों की कीमत यहाँ, सिर्फ एक गुमनाम है।



क्या यही है वो दुनिया, जिसका सपना देखा था।
या ये सिर्फ एक बहाना है, जो मैंने खुद से कहा
था।

कविता 24



माँ-बाप का अकेलापन

घर में हर कोना सुना है, सूनी है हर दीवार।
बच्चों के खिलौने भी चुप हैं, सूना है हर
त्यौहार।





कभी गूँजती थी हँसी, कभी रूठना-मनाना था।
आज सिर्फ़ ख़ामोशी है, और यादों का फ़साना
है।



बुढ़ापे की लाठी है, और आँखों में इंतज़ार है।
हर फ़ोन की घंटी पर, दिल को होता प्यार है।



बच्चे हैं अपने कामों में,
उन्हें कहाँ फुर्सत है।
माँ-बाप के दिल में मगर,
बस उनकी ही हसरत है।

यह कैसी दुनिया है,
जहाँ प्यार भी अधूरा है।
जवानी में भीड़ थी, बुढ़ापा सूना-सूना है।

कविता 25

घर सा नहीं रहा



हाँ, घर अब घर सा नहीं रहा, कमरों में भी एक वीराना है।
दीवारों पर लगी तस्वीरों में, बस एक सूना सा फ़साना है।



हँसी की जगह ख़ामोशी है, और शोर की जगह सन्नाटा है।
एक-एक कमरा पुकार रहा है, कोई अपना यहाँ नहीं आता है।

बचपन की किलकारियाँ गुम हैं, माँ की आवाज़ नहीं आती है।
पापा की डाँट भी अब, सिर्फ़ यादों में रह जाती है।



घर तो वही है, बस लोग बदल गए, अब हर रिश्ता अनजान सा है।
यह कैसा दौर आ गया है, जहाँ घर भी मकान सा है।

कविता 26



भीड़ में तन्हा

शहर की इस भीड़ में,
एक चेहरा है गुमनाम।
सबके साथ है, पर फिर भी,
अकेला है हर शाम।
शोर तो है चारों तरफ़,
पर दिल में ख़ामोशी है।
जैसे कोई कहानी हो,
जो बस दिल में ही दबी है।
हँसते हुए लोगों के बीच,
एक उदासी सी छाई है।
लगता है हर कोई यहाँ,
अपनी ही दुनिया में समाई है।



तन्हाई का ये एहसास,
भीड़ में भी क्यों होता है?
जैसे एक सूरज हो,
जो बादलों में खोया होता है।



यह कैसी दुनिया है,
जहाँ सबके होते हुए भी,
यह दिल तन्हा है।
जैसे एक सागर हो,
और फिर भी प्यासा है।

कविता 27

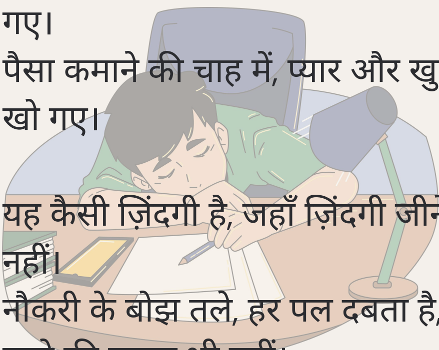
नौकरी और ज़िंदगी



नौकरी की भाग-दौड़, और ज़िंदगी की धीमी रफ्तार।
दोनों में तालमेल बिठाना, नहीं है इतना आसान।

सुबह की पहली किरण से, रात के गहरे अंधेरे तक।
बस काम, काम और काम, जैसे एक अंतहीन सफर।

फ़ाइलें, मीटिंग्स, डेडलाइन्स, सब कुछ है ज़रूरी।
पर इस सब के बीच, कहीं खो रही है ज़िंदगी की धुरी।



सपनों को पूरा करने की होड़ में, अपनों से दूर हो गए।
पैसा कमाने की चाह में, प्यार और खुशियों को खो गए।

यह कैसी ज़िंदगी है, जहाँ ज़िंदगी जीने का वक्त नहीं।
नौकरी के बोझ तले, हर पल दबता है, और खुश रहने की चाहत भी नहीं।

कविता 28

बेटी होना जुर्म क्यों?

जन्म से पहले ही, क्यूँ मुझे कोख में मारा जाता है?
बेटी होना क्या इतना बड़ा जुर्म है, कि जीने का हक़ छीना जाता है?



जब दुनिया में आती हूँ,
तो क्यूँ बोझ बन जाती हूँ?
अपने ही घर में,
परायी क्यों कहलाती हूँ?

स्कूल में पढ़ने जाती हूँ,
तो घर का काम बताया जाता है।
भाई को मिलती है आज़ादी,
मुझे हर पल रोका जाता है।

जब बड़ी होती हूँ, तो क्यूँ डर के साये में रहती हूँ?
हर राह पर, हर नज़र से, क्यूँ मैं सहमी रहती हूँ?

यह कैसा समाज है, जहाँ बेटी होना एक श्राप है?
खुशियाँ तो दूर की बात हैं, यहाँ तो बस इंसाफ की आस है।

कविता 29

बूढ़े कंधे



वक़्त की धूप में, झुर्रियाँ गहरी हो गईं।
ज़िम्मेदारी के बोझ से, कमर भी झुक गई।

कमज़ोर हो गए हाथ, काँपती हैं उँगलियाँ।
पर आज भी उठाने को तैयार हैं, तुम्हारे सुख
की झोलियाँ।



कभी तुम थे इन कंधों पर, घोड़ा बन दौड़ाते थे।
आज तुम अपने सपनों में हो, और हम अकेले
रह जाते हैं।

यह कैसा इंसाफ़ है, कैसी यह दुनियादारी।
जवानी में तुम पर सब लुटाया, बुढ़ापे में मिली
है बेबसी सारी।

बस एक ही दुआ है अब, हर साँस के बाद।
तुम्हें हमेशा खुश देखें, यही है आखिरी
फ़रियाद।



कविता 30

अंतिम शांति

शांत हुई धड़कनें,
थम गई साँसें।
अंतिम यात्रा पर निकली,
ये जीवन की राहें।



शोर-शराबे से दूर,
एक गहरी नींद में है।
सुकून है चेहरे पर,
अब कोई दर्द नहीं है।

जीवन के हर संघर्ष से,
अब मिल गई मुक्ति।
दुनिया की उलझनों से,
मिल गई अंतिम शांति।



सब कुछ पीछे छूट गया,
प्रेम, मोह, माया।
मिट्टी में मिल गया,
यह नश्वर काया।

यादें ही अब बस बाकी हैं, उनका तो कोई अंत नहीं। पर जो चला गया है, उसे अब कोई गम नहीं!

लेखक परिचय

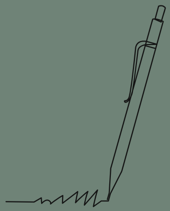
मैं **प्रियम्बदा पांडेय** ,यह कविता–संग्रह, "**मेरे जीवन की कविता – कुछ मीठे पल, कुछ खट्टी यादें और कुछ कड़वे सच**", मेरे जीवन का एक खुला पन्ना है। इसमें मैंने अपने दिल के हर कोने से निकली भावनाओं को शब्दों का रूप दिया है।

मैं, एक आम इंसान हूँ, जो अपनी ज़िंदगी के हर अनुभव को महसूस करता है। मैंने उन रिश्तों को करीब से देखा है, जो दिखावे के बोझ तले दब गए हैं। मैंने उन बूढ़े कंधों का दर्द भी समझा है, जो अब अकेलेपन का बोझ ढो रहे हैं। मैंने उन बेज़ुबान लड़कियों की पीड़ा भी महसूस की है, जिन्हें जीने का हक़ भी नहीं मिलता।

यह किताब सिर्फ़ कविताएँ नहीं, बल्कि मेरे जीवन का सार है। इसमें आपको माँ–बाप के अकेलेपन का दर्द, एक सूनी राखी की कहानी, और ज़िंदगी की भाग–दौड़ में खोई हुई खुशियाँ भी मिलेंगी।

मेरा मानना है कि कविता सिर्फ़ शब्दों का खेल नहीं, बल्कि भावनाओं का एक आईना है। मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरी कविताएँ आपके दिल को छू जाएँगी, और आप भी इन कविताओं में अपनी कहानी का एक अंश पाएँगे।

"अगर किसी पाठक की आँखें नम हो जाएँ या होठों पर हल्की सी मुस्कान आ जाए—तो समझिए, कविता पूरी हुई।"





मेरे जीवन की कविता

कुछ मीठे पल कुछ खट्टी यादें
और कुछ कड़वे सच

कुछ पन्ने मीठे हैं जेंसे माँ के आँचल की छाँव,
कुछ पनें कड़वे हैं जेंसे टूटी उम्मीद की ठंडी छाँव.

और कुछ पने ऐसे हैं जो दिल की कड़वी सच्चाय्यों
को चिना लाग-लपपेट कह देते हैं

यह सिर्फ कविता नहीं – मेरा जीवन है,
खुला हुआ.

PRIYAMBADA PANDEY